

प्रारंभिक परीक्षा

नीलगिरि तहर जनसंख्या अनुमान 2026

संदर्भ

प्रोजेक्ट नीलगिरि तहर के तहत नवीनतम समकालिक जनसंख्या अनुमान (synchronised population estimation) तमिलनाडु में इस प्रजाति के लिए एक सकारात्मक सुधार प्रवृत्ति का संकेत देता है।

नीलगिरि तहर के बारे में

- **वैज्ञानिक नाम:** नीलगिरिट्रैगस हाइलोक्रीयस। जंगली भेड़ और बकरियों (Caprinae उपपरिवार) से संबंधित।
- **पर्यावास:** पश्चिमी घाट के उच्च ऊंचाई वाले पर्वतीय घास के मैदान और चट्टानी ढलान। (शोला-घास का मैदान पारिस्थितिकी तंत्र)
 - केवल पहाड़ी पहाड़ी दक्षिण भारत के लिए स्थानिक हैं।
- **वितरण:** तमिलनाडु और केरल में कन्याकुमारी से नीलगिरि पहाड़ियों तक दक्षिणी पश्चिमी घाट के लिए स्थानिक।
 - **प्रमुख गढ़:** अनामलाई पहाड़ियाँ, नीलगिरि परिदृश्य, मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान और एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान।
- **पारिस्थितिक भूमिका:** यह एक महत्वपूर्ण पर्वतीय पशु है जो घास के मैदानों के पारिस्थितिकी तंत्र और पोषक तत्वों के चक्रण को बनाए रखने में मदद करता है।
- **हाल ही में जनसंख्या अनुमान:** संख्या 1,364 दर्ज की गई, जो 2025 में नीलगिरि तहर परियोजना के तहत 1,303 से 4.68% की वृद्धि है।
 - **सबसे बड़ी आबादी:** अनामलाई पहाड़ियों में, जो तमिलनाडु की आबादी का लगभग 45% हिस्सा रखती है।
- **संरक्षण की स्थिति:** आईयूसीएन - लुप्तप्राय; सीआईटीईएस परिशिष्ट I; वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I; तमिलनाडु का राज्य पशु।
- **संरक्षण पहल:** नीलगिरि तहर परियोजना (2022) के तहत संरक्षित जिसका उद्देश्य जनसंख्या पुनर्प्राप्ति, आवास बहाली और वैज्ञानिक निगरानी है।



मौलाना बरकतउल्लाह भोपाली

संदर्भ

बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल का नाम बदलने के एक प्रस्ताव ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी मौलाना बरकतुल्लाह के जीवन और योगदान की ओर नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है।

मौलाना बरकतउल्लाह के बारे में

- **जन्म और शिक्षा:** 7 जुलाई 1854 को भोपाल में जन्मे; बॉम्बे और लंदन में उच्च शिक्षा प्राप्त की।
- **विद्वान और शिक्षक:** इस्लामी विद्वान, पत्रकार, बहुभाषाविद और शिक्षक; लिवरपूल में और बाद में टोक्यो विश्वविद्यालय में पढ़ाया गया।
- **निर्वासन में स्वतंत्रता सेनानी:** अपना अधिकांश जीवन भारत के बाहर स्वतंत्रता के लिए काम करते हुए बिताया।
- **राष्ट्रवादी दृष्टि:** हिंदू-मुस्लिम एकता की वकालत की और ब्रिटिश फूट डालो और राज करो नीतियों का विरोध किया।

योगदान

- **विदेशी क्रांतिकारी नेटवर्क:** भाषणों, लेखनों और राजनीतिक आउटरीच के माध्यम से यूरोप, अमेरिका और एशिया में भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्थन जुटाया।
- **क्रांतिकारी पत्रकारिता:** उपनिवेशवाद विरोधी विचारों को फैलाने के लिए द इस्लामिक फ्रेटरनिटी और अल इस्लाम जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।
- **गदर आंदोलन:** गदर पार्टी से जुड़े और ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध का समर्थन किया।
- **प्रथम विश्व युद्ध की गतिविधियाँ:** जर्मनी में भारतीय क्रांतिकारियों के साथ काम किया और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीय युद्धबंदियों को लामबंद करने का प्रयास किया।
- **भारत की अनंतिम सरकार (1915):** काबुल में स्थापित भारत की पहली निर्वासित सरकार के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया, साथ में राजा महेंद्र प्रताप (राष्ट्रपति) और मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी; इसलिए इन्हें अक्सर "भारत का पहला प्रधान मंत्री" कहा जाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति:** भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जर्मनी, तुर्की, अफगानिस्तान और सोवियत रूस से समर्थन मांगा।
 - ○ 1919 में व्लादिमीर लेनिन से मुलाकात की और साम्राज्यवाद के खिलाफ सहयोग की वकालत की।
- **मान्यता:** 1988 में उनके सम्मान में भोपाल विश्वविद्यालय का नाम बदलकर बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय कर दिया गया।

वोल्बाचिया आधारित मच्छर नियंत्रण प्रौद्योगिकी

संदर्भ

अल्फाबेट की कंपनी वेरली ने अमेरिका में 32 मिलियन वोल्बाचिया-संक्रमित मच्छरों को छोड़ने का प्रस्ताव दिया है, ताकि बीमारी फैलाने वाले मच्छरों की आबादी को नियंत्रित करने के लिए एक जैविक विधि अपनाई जा सके।

वोल्बाचिया टेक्नोलॉजी के बारे में

- **वोल्बाचिया:** एक प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला जीवाणु जो कई कीड़ों में पाया जाता है, लेकिन प्राकृतिक रूप से एडीज एजिप्टी (*Aedes aegypti*) में नहीं पाया जाता, जो डेंगू, चिकनगुनिया, जीका और पीत ज्वर (yellow fever) का मुख्य वाहक है।
- **तंत्र:** जब इसे एडीज मच्छरों में प्रवेश कराया जाता है, तो वोल्बाचिया वायरस को मच्छर के अंदर बढ़ने से रोकता है, जिससे मनुष्यों में संचरण कम हो जाता है।

- **दृष्टिकोण:** जनसंख्या प्रतिस्थापन रणनीति का उपयोग करता है, जहां रोग-अवरोधक मच्छर धीरे-धीरे रोग-संचारित करने वाली आबादी का स्थान ले लेते हैं।
- **प्रसार:** संक्रमित मादा मच्छरों से उनके वंशजों में पारित होता है, जिससे यह जंगली मच्छर आबादी में स्वाभाविक रूप से स्थापित हो जाता है।
- **लाभ:** रोग संचरण को कम करता है, कीटनाशकों पर निर्भरता कम करता है, दीर्घकालिक नियंत्रण प्रदान करता है और मनुष्यों तथा पर्यावरण के लिए सुरक्षित है।
- **वैश्विक अपनाव:** विश्व मच्छर कार्यक्रम (WMP) द्वारा प्रचारित और डेंगू नियंत्रण के लिए कई देशों में लागू किया गया है।
- **अनूठी विशेषता:** यह मच्छरों की आबादी को खत्म करने के बजाय रोग फैलाने की उनकी क्षमता को कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

माइक्रोसॉफ्ट की मेजराना 2 क्वांटम चिप

संदर्भ

माइक्रोसॉफ्ट ने मेजराना 2 (Majorana 2) का अनावरण किया, जो एक क्वांटम चिप है जिसके बारे में दावा किया गया है कि यह अपने पूर्ववर्ती की तुलना में 1,000 गुना अधिक विश्वसनीय है, जो दोष-सहिष्णु (fault-tolerant) क्वांटम कंप्यूटिंग को आगे बढ़ाती है।

मेजराना 2 के बारे में

- **प्रौद्योगिकी:** टोपोलॉजिकल क्यूबिट्स पर आधारित, जिन्हें पारंपरिक क्यूबिट्स की तुलना में त्रुटियों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **कार्य सिद्धांत:** स्थिर क्वांटम अवस्थाएं बनाने के लिए मेजराना क्वासिपार्टिकल्स (भौतिक विज्ञानी एंड्रो मेजराना द्वारा भविष्यवाणी की गई) और पदार्थ की एक नवीन अवस्था का उपयोग करता है।
- **विश्वसनीयता:** क्यूबिट्स लगभग 20 सेकंड तक स्थिर रहते हैं, जबकि पिछली मेजराना 1 चिप में यह मिलीसेकंड था।
- **डिज़ाइन में सुधार:** अतिचालक (superconductor) के रूप में एल्यूमीनियम के बजाय सीसा (lead) का उपयोग करता है, जिससे क्यूबिट स्थिरता में सुधार होता है।
- **अनुप्रयोग:** उन्नत सामग्री की खोज, उर्वरक विकास, माइक्रोप्लास्टिक हटाने और अन्य जटिल वैज्ञानिक सिमुलेशन के लिए संभावित रूप से उपयोगी है।
- **चुनौतियां:** क्वांटम कंप्यूटर अभी भी क्यूबिट की नाजुकता, त्रुटि सुधार और बड़े पैमाने पर स्केलेबिलिटी के मुद्दों का सामना कर रहे हैं; अभी तक कोई भी पूर्णतः दोष-सहिष्णु वाणिज्यिक क्वांटम कंप्यूटर मौजूद नहीं है।

झींगा निर्यात में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक अवशेष

संदर्भ

भारतीय झींगा निर्यात में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक दवाओं के अवशेष पाए गए, जिसके कारण यूरोपीय संघ (EU), अमेरिका और जापान जैसे प्रमुख बाजारों द्वारा खेप (consignments) को अस्वीकार कर दिया गया।

एंटीबायोटिक दवाओं का पता चला

- **क्लोरैमफेनिकोल:** एक ब्रॉड-स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक; एप्लास्टिक एनीमिया और अस्थि मज्जा विषाक्तता जैसे जोखिमों के कारण खाद्य-उत्पादक जानवरों में प्रतिबंधित।
- **नाइट्रोफुरान्स:** सिंथेटिक रोगाणुरोधी (antimicrobials) का एक वर्ग (उदा. फराज़ोलिडोन, नाइट्रोफ्यूराज़ोन); प्रतिबंधित क्योंकि उनके मेटाबोलाइट्स संभावित रूप से कार्सिनोजेनिक (कैंसरकारी) और उत्परिवर्तजन (mutagenic) होते हैं।
- **विनियामक स्थिति:** भारत ने 2025 में खाद्य-उत्पादक पशु पालन प्रणालियों में इनके आयात, निर्माण, बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था; केवल विशिष्ट मानव चिकित्सीय उपयोगों के लिए अनुमत है।
- **वैश्विक मानक:** यूरोपीय संघ, अमेरिका और जापान खाद्य आयात में अवशेषों के लिए सख्त या लगभग शून्य-सहिष्णुता (zero-tolerance) सीमा बनाए रखते हैं।
- **AMR से संबंध:** जलकृषि (aquaculture) में एंटीबायोटिक दवाओं के अंधाधुंध उपयोग से रोगाणुरोधी प्रतिरोध (Antimicrobial Resistance - AMR) में योगदान हो सकता है।

भारत में E85 ईंधन रोलआउट

संदर्भ

भारत ने फ्लेक्स-फ्यूल मोबिलिटी को बढ़ावा देने और इथेनॉल-आधारित परिवहन के विस्तार के लिए चुनिंदा तेल विपणन कंपनियों (OMC) के खुदरा आउटलेट्स पर E85 ईंधन लॉन्च किया है।

E85 ईंधन के बारे में

- **संरचना और अनुकूलता:** इसमें 80–85% इथेनॉल और 14–19% पेट्रोल होता है; इसे फ्लेक्स-फ्यूल व्हीकल्स (FFV) के लिए डिज़ाइन किया गया है जो E20 से लेकर E100 तक के मिश्रण पर चल सकते हैं।
- **फीडस्टॉक:** इथेनॉल का उत्पादन गन्ने, मक्के, क्षतिग्रस्त खाद्यान्नों और कृषि अवशेषों से किया जाता है, जो 'कचरे से कंचन' (waste-to-wealth) पहल का समर्थन करता है।
- **ईंधन के गुण:** उच्च रिसर्व ऑक्टेन नंबर (RON ~108) बेहतर दहन (combustion), उच्च दक्षता और बेहतर इंजन प्रदर्शन को सक्षम बनाता है।
- **लाभ:**
 - **पर्यावरणीय लाभ:** जीवनचक्र ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को लगभग 61% तक कम कर सकता है और पार्टिकुलेट उत्सर्जन को काफी कम कर सकता है।
 - **आर्थिक लाभ:** पेट्रोल की तुलना में इसकी लागत कम है, कच्चे तेल के आयात को कम करता है और किसानों के लिए आय के अतिरिक्त अवसर पैदा करता है।
 - **रणनीतिक महत्व:** भारत के इथेनॉल सम्मिश्रण कार्यक्रम, ऊर्जा सुरक्षा और स्वच्छ परिवहन संक्रमण का समर्थन करता है; ब्राजील बड़े पैमाने पर E85/FFV अपनाने का प्रमुख वैश्विक उदाहरण बना हुआ है।

2025-26 में जीडीपी वृद्धि दर 7.7% रहने का अनुमान

संदर्भ

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) ने राष्ट्रीय आय के अनंतिम अनुमान (Provisional Estimates of National Income) जारी किए, जो वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत की जीडीपी वृद्धि 7.7% दर्शाते हैं, जो फरवरी 2026 में जारी 7.6% के अनुमान से अधिक है।

मुख्य निष्कर्ष

- **मजबूत समग्र आर्थिक विकास:** वित्तीय वर्ष 2025-26 में भारत की जीडीपी में 7% की वृद्धि हुई, जबकि चौथी तिमाही (Q4) की वृद्धि 7.8% रही, जो पहले के अनुमानों से अधिक है।
- **विनिर्माण और सेवा-नेतृत्व वाली वृद्धि:** विनिर्माण क्षेत्र में 7% का विस्तार हुआ, जबकि व्यापार, परिवहन, होटल, संचार और संबंधित सेवाओं में 11% की वृद्धि दर्ज की गई।
- **खपत और निवेश में सुधार:** निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE) में 7% की वृद्धि हुई, जबकि सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF) में 8.2% की वृद्धि हुई, जो मजबूत मांग और निवेश का संकेत देता है।
- **कृषि विकास धीमा रहा:** वित्तीय वर्ष 2025-26 में कृषि वृद्धि धीमी होकर 3% रह गई, जो पिछले वर्ष 2% थी, यह क्षेत्रीय विचलन (sectoral divergence) को दर्शाता है।

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

संदर्भ

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने अपनी मौद्रिक नीति समिति (MPC) के माध्यम से, पश्चिम एशिया संघर्ष, कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं से उत्पन्न होने वाले बढ़ते मुद्रास्फीति दबावों के बावजूद रेपो दर को 5.25% पर अपरिवर्तित रखा है।

एमपीसी के प्रमुख नीतिगत निर्णय

- रेपो दर 5.25% पर अपरिवर्तित
- स्थायी जमा सुविधा (SDF) दर: 5.00%
- रेपो दर: 5.25%
- सीमांत स्थायी सुविधा (MSF) दर: 5.50%
- बैंक दर: 5.50%

MPC ने दरों को अपरिवर्तित क्यों रखा?

- **वैश्विक आर्थिक वातावरण खराब हुआ है:** पिछली नीतिगत बैठक के बाद से, निरंतर भू-राजनीतिक संघर्षों, विशेष रूप से पश्चिम एशिया में, के कारण वैश्विक स्थितियां खराब हुई हैं। लगातार तनाव ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अनिश्चितता बढ़ा दी है, आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित किया है, और उच्च कमोडिटी एवं ऊर्जा कीमतों में योगदान दिया है।
 - इन घटनाक्रमों ने भारत सहित दुनिया भर में आर्थिक विकास और मुद्रास्फीति दोनों के लिए जोखिम पैदा कर दिया है।

- **उच्च ऊर्जा कीमतें और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान:** संघर्ष-प्रेरित कच्चे तेल और ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि ने विश्व स्तर पर उत्पादन और परिवहन लागत बढ़ा दी है। इसके साथ ही, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानों ने महत्वपूर्ण इनपुट की उपलब्धता को प्रभावित किया है, जिससे कीमतों पर दबाव बढ़ रहा है।
- **वैश्विक संघर्ष की अवधि को लेकर अनिश्चितता:** RBI ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मुद्रास्फीति और विकास का भविष्य का प्रक्षेपवक्र इस बात पर काफी हद तक निर्भर करता है कि भू-राजनीतिक संघर्ष कितने समय तक बना रहता है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं कितनी जल्दी सामान्य होती हैं। स्पिलओवर प्रभावों (spillover effects) के परिमाण का अनुमान लगाना अभी भी मुश्किल है, जिसके लिए एक सतर्क नीतिगत दृष्टिकोण आवश्यक है।

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति के अनुमान में संशोधन

- RBI ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए अपने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) मुद्रास्फीति अनुमान को संशोधित कर 5.1% कर दिया है, जो कि पहले के अनुमान से 50 आधार अंक (0.5 प्रतिशत अंक) अधिक है।
- यह ऊर्ध्वमुखी संशोधन (upward revision) आयातित मुद्रास्फीति, ऊर्जा लागत, खाद्य मूल्य दबाव और कृषि उत्पादन में अनिश्चितता के संबंध में चिंताओं को दर्शाता है।

दूसरे दौर के मुद्रास्फीति प्रभावों का जोखिम

- हालांकि अंतर्निहित मुद्रास्फीति अपेक्षाकृत मध्यम बनी हुई है, RBI ने संभावित दूसरे दौर के प्रभावों के प्रति आगाह किया है। बढ़ती कीमतें अंततः वेतन मांगों और मुद्रास्फीति की उम्मीदों को प्रभावित कर सकती हैं, जिससे मुद्रास्फीति अधिक स्थायी और नियंत्रित करने में कठिन हो जाएगी।

विकास परिदृश्य: RBI ने GDP वृद्धि के अनुमान को कम किया

वास्तविक जीडीपी वृद्धि का अनुमान घटाया गया

- RBI ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए भारत के वास्तविक GDP वृद्धि के अनुमान को संशोधित कर 6.6% कर दिया है, जो कि 6.9% के पहले के अनुमान से कम है।
- यह अवनयन (downgrade) उच्च इनपुट लागत, कमजोर वैश्विक मांग और भू-राजनीतिक तनावों से उत्पन्न होने वाले व्यवधानों के संबंध में चिंताओं को दर्शाता है।

मुख्य परीक्षा

आरबीआई की वार्षिक रिपोर्ट 2025-26

संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने 2025-26 के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी की। केंद्रीय बैंक ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय वर्ष 2026-27 (FY27) में लचीला (resilient) रहने की उम्मीद है, जो कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, उच्च ऊर्जा कीमतों और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानों वाले चुनौतीपूर्ण बाहरी वातावरण का सफलतापूर्वक सामना कर रही है।

2025-26 के लिए आरबीआई वार्षिक रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं

- **घरेलू संवृद्धि और उत्पादन:** भारत ने सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी, जिसमें 2025-26 में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर 7.3% अनुमानित है, जिसे 6.5% के प्रारंभिक अनुमान से ऊपर की ओर संशोधित किया गया है
 - 2025-26 में संवृद्धि की गति प्रमुख क्षेत्रों में व्यापक आधार वाले विस्तार (broad-based expansion) से प्रेरित थी, जिसमें निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE) में 7.7%, सकल पूंजी निर्माण में 6.5%, सेवा सकल मूल्य वर्धित (GVA) में 8.7%, और विनिर्माण GVA में 11.5% की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जो हाल के वर्षों में इसका सबसे मजबूत प्रदर्शन है।
- **मुद्रास्फीति और मूल्य स्थिति:** 2025-26 के लिए औसत हेडलाइन उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) को वर्ष भर 4.0% के प्रारंभिक अनुमान से घटाकर 2.0% (दिसंबर 2025 तक) कर दिया गया।
 - मुख्य (कोर) मुद्रास्फीति अधिक स्थिर रही, जो 4% के आसपास बनी रही, जिससे आगे की नीतिगत ढील (policy easing) सीमित हो गई।
- **सरकारी वित्त की स्थिति:** 2025-26 (संशोधित अनुमान) के लिए सकल राजकोषीय घाटा (GFD) सकल घरेलू उत्पाद का 4.4% रहा, जो 2024-25 में 4.8% से कम है।
 - 2026-27 के लिए GFD का बजट अनुमान सकल घरेलू उत्पाद के 4.3% पर रखा गया है, जो 2020-21 में महामारी के 9.2% के उच्चतम स्तर से गिरावट की प्रवृत्ति को जारी रखता है।
 - निगम कर (corporation tax) और मजबूत उत्पाद/सीमा शुल्क संग्रह से प्रेरित होकर, सकल कर राजस्व में 7.4% की वृद्धि हुई।
 - गैर-कर राजस्व में 24.4% की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जो मुख्य रूप से बजट से अधिक प्राप्तियों के कारण थी।
 - पूंजीगत व्यय 2025-26 (RE) में सकल घरेलू उत्पाद के 3.1% पर स्थिर रहा और 2026-27 में इसके 11.5% बढ़ने का बजट अनुमान है।
- **ऋण-से-जीडीपी अनुपात:** 2026-27 में केंद्र का ऋण-से-जीडीपी अनुपात घटकर 55.6% होने का बजट अनुमान है।
- **राज्य वित्त:**
 - राज्यों ने 2025-26 के लिए सकल घरेलू उत्पाद के 3.3% के GFD का बजट रखा था।

- 16वें वित्त आयोग (FC-XVI) ने विभाज्य कर पूल (divisible tax pool) में राज्यों की हिस्सेदारी 41% बरकरार रखी और राष्ट्रीय संवृद्धि में राज्यों की भूमिका को मान्यता देने के लिए एक नया मानदंड (जीडीपी में राज्यों का योगदान (भार: 10%)) पेश किया।
- **भारत का बाह्य क्षेत्र:**
 - **माल व्यापार:** माल व्यापार घाटा पिछले वर्ष के 282.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2025-26 में 333.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
 - पेट्रोलियम उत्पादों, रत्न एवं आभूषण और चावल के निर्यात में संकुचन देखा गया।
 - एक प्रमुख व्यापारिक बदलाव में, 2025-26 में चीन अमेरिका को पछाड़कर भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया।
 - भारत ने यूके (CETA), ओमान (CEPA), और न्यूजीलैंड (FTA) के साथ व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर किए; यूरोपीय संघ (EU) के साथ FTA वार्ता भी जनवरी 2026 में संपन्न हुई।
- **सेवाएँ और प्रेषण:** अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान शुद्ध सेवा निर्यात में 15.3% (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई।
 - सेवा निर्यात में सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाओं की हिस्सेदारी 77.8% रही।
 - अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान कामगारों के प्रेषण (workers' remittances) में 10.1% (वर्ष-दर-वर्ष) की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। भारत में 200 अमेरिकी डॉलर भेजने की औसत लागत 5.3% रही - जो 6.4% के वैश्विक औसत से कम है, लेकिन 2030 तक 3% के सतत विकास लक्ष्य (SDG) से अभी भी अधिक है।
- **चालू खाता और पूंजी प्रवाह:** चालू खाता घाटा (CAD) अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान 30.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर (जीडीपी का 1.1%) पर सीमित रहा।
- शुद्ध प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) सुधरकर 7.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया; ग्रीनफील्ड एफडीआई घोषणाओं में भारत विश्व स्तर पर (अमेरिका के बाद) दूसरे स्थान पर रहा।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:** भुगतान संतुलन (BoP) के आधार पर विदेशी मुद्रा भंडार में 30.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर (अप्रैल-दिसंबर 2025) की गिरावट आई क्योंकि पूंजी प्रवाह CAD से कम रहा।
 - विदेशी मुद्रा भंडार ने लगभग 11 महीने के व्यापारिक आयात के लिए एक कवर प्रदान किया और दिसंबर 2025 के अंत में कुल विदेशी ऋण का लगभग 90% था।
 - बाह्य ऋण-से-जीडीपी अनुपात 20.4% पर सीमित रहा, और प्रमुख भेद्यता संकेतक (vulnerability indicators) आरामदायक सीमा के भीतर रहे।

मौद्रिक नीति और बैंकिंग प्रदर्शन

- **रेपो दर कार्रवाइयां:** एमपीसी (MPC) ने 2025-26 के दौरान नीतिगत रेपो दर में संचयी रूप से 100 आधार अंकों (bps) की कटौती की, जिससे यह 5.25% हो गई।
 - नीतिगत रुख (stance) को अप्रैल 2025 में तटस्थ (neutral) से बदलकर उदार (accommodative) कर दिया गया था, जो जून 2025 में पुनः तटस्थ हो गया।

- **तरलता प्रबंधन:** नकद आरक्षित अनुपात (CRR) को चरणबद्ध तरीके से (सितंबर-नवंबर 2025) 100 आधार अंक (bps) घटाकर शुद्ध मांग और समय देनदारियों (NDTL) का 3.0% कर दिया गया, जिससे लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये की टिकाऊ तरलता (durable liquidity) का संचार हुआ।
- **ऋण उठाव:** बैंक ऋण का विस्तार दोहरे अंकों में हुआ और यह काफी हद तक व्यापक आधार वाला था, जिसका नेतृत्व सेवा और खुदरा क्षेत्रों ने किया।
- **नीति संचरण:** अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के नए और बकाया रुपया ऋणों पर भारित औसत उधारी दरों (WALRs) में 2025-26 के दौरान क्रमशः 95 आधार अंक और 78 आधार अंक की गिरावट आई, जो संचयी 100 आधार अंक की रेपो दर में कमी की प्रतिक्रिया थी।
- **श्रम बाजार:** मजबूत घरेलू मांग और उच्च उत्पादकता द्वारा समर्थित, चार श्रम संहिताओं (Labour Codes) के पूर्ण कार्यान्वयन के साथ श्रम बाजार की स्थितियों में सुधार की उम्मीद है।
 - सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए ऋण में 33.1% की वृद्धि हुई, जो रोजगार-गहन क्षेत्रों (employment-intensive sectors) को लक्षित वित्तीय सहायता को दर्शाता है और रोजगार सृजन को बढ़ावा देता है।

2026-27 के लिए भारत की आर्थिक संभावनाएं और रणनीतिक पहल

- **वैश्विक आर्थिक परिदृश्य:** आईएमएफ (IMF) का अनुमान है कि 2026 में वैश्विक संवृद्धि दर घटकर 3.1% हो जाएगी और वैश्विक मुद्रास्फीति बढ़कर 4.4% हो जाएगी, जो मुख्य रूप से पश्चिम एशिया संघर्ष और उससे जुड़ी आपूर्ति श्रृंखला एवं शिपिंग मार्ग के व्यवधानों से पटरी से उतर गई है।
- **भारत के जीडीपी और मुद्रास्फीति लक्ष्य:** 2026-27 के लिए भारत की वास्तविक जीडीपी संवृद्धि दर 6.9% अनुमानित है, जिसमें सीपीआई (CPI) मुद्रास्फीति 4.6% अनुमानित है। एमपीसी ने रेपो दर को 5.25% पर बरकरार रखा, और सरकार ने 31 मार्च 2031 तक मुद्रास्फीति के लक्ष्य को 4% ($\pm 2\%$ सहिष्णुता बैंड के साथ) पर बनाए रखा।
- **राजकोषीय समेकन और स्थिरता:** 2026-27 के लिए सकल राजकोषीय घाटा (GFD) जीडीपी के 4.3% पर लक्षित है।
- **कृषि क्षेत्र:** कृषि उत्पादन मानसून पर निर्भर बना हुआ है, जिसमें अल नीनो (El Niño) की स्थितियां नकारात्मक जोखिम (downside risk) पैदा करती हैं और हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) संभावित सकारात्मक पहलू प्रदान करता है।
- **विनिर्माण और जलवायु प्रतिबद्धताएँ (NDCs):** केंद्रीय बजट 2026-27 ने एक केंद्रित नीतिगत प्रोत्साहन के लिए सात रणनीतिक क्षेत्रों (अर्धचालक, दुर्लभ मृदा और बायोफार्मा सहित) की पहचान की।
 - भारत के अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) (2031-2035) अब गैर-जीवाश्म स्रोतों से 60% विद्युत क्षमता और 2035 तक जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता में 47% की कमी का लक्ष्य रखते हैं।
- **एफडीआई और व्यापार:** विदेशी पूंजी को आकर्षित करने के उपायों में उपग्रह निर्माण में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और डेटा केंद्रों के लिए कर अवकाश (tax holidays) / सुरक्षित आश्रय (safe harbors) शामिल हैं।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI):** एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के बाद, जहाँ एआई इम्पैक्ट पर नई दिल्ली घोषणा को अपनाया गया था, इंडियाएआई मिशन (IndiaAI Mission) और महत्वपूर्ण निजी निवेशों द्वारा समर्थित, भारत एआई प्रतिस्पर्धात्मकता (AI competitiveness) के लिए विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है।

- **बैंकिंग और डिजिटल भुगतान:** आरबीआई केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) पायलटों, यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस (ULI) और मुलेहंटर.एआई (MuleHunter.ai) फ्रेमवर्क का विस्तार करने की योजना बना रहा है।
- **पेमेंट्स विजन 2028** द्वारा निर्देशित, आरबीआई डिजिटल पेमेंट्स इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म (DPIP) को लागू करेगा और वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय रणनीति (NSFI) 2025-30 को आगे बढ़ाएगा।

आरबीआई द्वारा पहचाने गए वैश्विक आर्थिक जोखिम

- **वैश्विक संवृद्धि पर प्रमुख अवरोध:** 2026 में वैश्विक विस्तार के प्राथमिक अवरोधक के रूप में भू-राजनीतिक जोखिम फिर से उभर आया है। फरवरी 2026 के अंत में पश्चिम एशिया में संघर्ष के प्रकोप ने वैश्विक अनुमानों को भारी रूप से अवनत (downgrade) कर दिया है।
- **आईएमएफ द्वारा अधोमुखी संशोधन:** अपने आधारभूत परिदृश्य (baseline scenario) में, आईएमएफ ने 2026 में वैश्विक आर्थिक संवृद्धि को घटाकर 3.1% (जनवरी में अनुमानित 3.3% से) कर दिया और चेतावनी दी कि वैश्विक व्यापार मात्रा धीमी होकर 2.8% हो जाएगी।
- **वैश्विक मुद्रास्फीति और आपूर्ति श्रृंखलाएँ:** 2026 में वैश्विक मुद्रास्फीति का पूर्वानुमान बढ़ाकर 4.4% कर दिया गया है (जनवरी के 3.8% से अधिक)।
- **वित्तीय बाजार और तकनीकी इक्विटी जोखिम:** सख्त व्यापक आर्थिक वातावरण से बाजार की अस्थिरता और "जोखिम से बचने (risk-off)" की भावना को बढ़ावा देने का जोखिम है, जिससे प्रौद्योगिकी क्षेत्र के उच्च मूल्यांकन के पुनर्मूल्यांकन के माध्यम से इक्विटी बाजार में सुधार (corrections) हो सकता है।
- **नीतिगत सुझाव:** बढ़ते संरक्षणवाद, बढ़ते भू-राजनीतिक जोखिम और ऋण स्थिरता चिंताओं के बढ़ते खतरे राजकोषीय, मौद्रिक और बहुपक्षीय मोर्चों पर विश्व स्तर पर समन्वित नीतिगत कार्यों (coordinated policy actions) की मांग करते हैं।

आगे की राह

- **डेटा-संचालित पर्यवेक्षण:** उच्च जोखिम वाले कॉर्पोरेट और खुदरा ऋण पोर्टफोलियो में संपत्ति की गुणवत्ता के तनाव (asset quality stress) की प्रारंभिक पहचान को सक्षम करने के लिए उन्नत सूक्ष्म-डेटा एनालिटिक्स और पर्यवेक्षी डेटा गुणवत्ता सूचकांक (Supervisory Data Quality Index - sDQI) का उपयोग करना।
- **डिजिटल धोखाधड़ी से निपटना:** तेजी से बढ़ते डिजिटल भुगतान क्षेत्र में पूर्ण उपभोक्ता विश्वास को बनाए रखने के लिए डिजिटल पेमेंट्स इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म (DPIP) को व्यवस्थित रूप से लागू करें और पूरे बैंकिंग नेटवर्क में मशीन-लर्निंग-आधारित मुलेहंटर.एआई (MuleHunter.ai) रजिस्ट्री का विस्तार करना।
- **घाटे पर नियंत्रण का मार्ग:** GFD को आरामदायक रूप से स्थिर सीमाओं के भीतर लाने के लिए मध्यम अवधि के राजकोषीय समेकन मार्ग (fiscal consolidation path) का कड़ाई से पालन बनाए रखें, जिससे निजी क्षेत्र के लिए ऋण योग्य पूंजी (loanable capital) मुक्त हो सके।
- **रुपये (INR) का अंतर्राष्ट्रीयकरण:** लेनदेन लागत को काफी कम करने और भारतीय सीमा पार व्यापार को विदेशी मुद्रा अस्थिरता से बचाने के लिए मौजूदा साझेदारों से परे विशेष रुपया वोस्ट्रो खातों (SRVAs) और स्थानीय मुद्रा व्यवस्था (LCAs) के नेटवर्क का विस्तार करना।

- **तकनीक-संचालित विस्तार सेवाएँ:** छोटे किसानों (smallholders) को वास्तविक समय (real-time), एआई-संचालित फसल प्रबंधन और मौसम सलाहकार समाधान प्रदान करने के लिए भारत-विस्तार (Bharat-VISTAAR) प्लेटफॉर्म की ऑनबोर्डिंग और भाषा क्षमताओं का विस्तार करना।

